AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | An Open Access & Indexed
Volume 07 | Issue 09 | September 2026 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 01-07

थार के ताल छपर का पारिस्थितिकी एवं सांस्कृतिक महा संगम का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. जगना राम सुडा (भूगोल)

प्राचार्य - टैगोर ग्रामोत्थान महाविद्यालय, रतनपुरा (चूरू) राजस्थान

सारांश:-

थार मरुस्थल के उत्तर-पूर्वी छोर पर स्थित 'ताल छपर अभ्यारण्य' (चूरू, राजस्थान) के सूक्ष्म पारिस्थितिकी तंत्र और उसकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता का एक व्यापक भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ताल छपर का भू-भाग एक अद्वितीय 'लवणीय बेसिन'और 'सवाना' सदृश घास के मैदान का प्रतिनिधित्व करता है, जो संकटग्रस्त प्रजाति 'काले हिरण' और विभिन्न प्रवासी पक्षियों का मुख्य आश्रय स्थल है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया के बीच एक 'हरित नखलिस्तान' की भूमिका निभाता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, यह क्षेत्र मानव-प्रकृति सह-अस्तित्व, बिश्नोई व स्थानीय ग्रामीण समुदायों की पर्यावरण-चेतना और शेखावाटी लोक संस्कृति का अनुपम उदाहरण है। इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर यहां के भौगोलिक कारकों, जैव-विविधता और सांस्कृतिक ताने-बाने के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया गया है।

यह क्षेत्र काले हिरणों की क्रीड़ा स्थली होने के साथ-साथ घास के मैदानों और प्रवासी पक्षियों का प्रमुख आश्रय स्थल है। साथ ही, यह मरुस्थलीय संस्कृति, लोक परंपराओं और ऐतिहासिक धरोहरों का जीवंत केंद्र है।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Jagna Ram Suda Principal Tagore Gramotthan College, Ratanpura (Churu), Rajasthan, India Email: drjrsuda100@ gmail.com	

मुख्य शब्द :-
ताल छापर, थार मरुस्थल, सूक्ष्म पारिस्थितिकी तंत्र, काला हिरण, मोथिया घास, सांस्कृतिक भूगोल, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, भौगोलिक अध्ययन।

प्रस्तावना:-

भौगोलिक अध्ययन में किसी विशिष्ट क्षेत्र के प्राकृतिक पर्यावरण और मानवीय गतिविधियों के अंतर्संबंधों का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। थार मरुस्थल, जो विश्व का सबसे घनी आबादी वाला मरुस्थलीय प्रदेश है, अपनी विषम जलवायु और अद्वितीय भू-आकृतियों के लिए प्रसिद्ध है। इसी मरुस्थल के अंतर्गत राजस्थान के चूरू जिले में स्थित 'ताल छापर' एक ऐसा विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र है, जहां की भू-आकृति, मृदा, जलवायविक दशाएं और वनस्पति मिलकर एक अनूठे सूक्ष्म पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं।

यह क्षेत्र केवल जैविक विविधता का ही केंद्र नहीं है, बल्कि यह थार की लोक-संस्कृति, धार्मिक मान्यताओं और ऐतिहासिक परंपराओं का भी एक महासंगम है। यहां का समाज सदियों से प्रकृति के साथ समन्वय बिठाकर रह रहा है।

भू-आकृतिक दृष्टिकोण: भू-वैज्ञानिकों (जैसे एच.एस. शर्मा, 1990) के अनुसार, थार मरुस्थल के खारे पानी के गर्त जैसे सांभर, डीडवाना और छापर, प्राचीन टेथिस सागर के अवशेष हैं। इन क्षेत्रों की लवणीय मृदा यहां की विशिष्ट वनस्पति को निर्धारित करती है।

थार मरुस्थल अपनी विषम भौगोलिक परिस्थितियों के लिए जाना जाता है, परंतु इसमें कुछ ऐसे सूक्ष्म पारिस्थितिक तंत्र विकसित हुए हैं जो जैव विविधता के अनूठे उदाहरण हैं। ताल छापर ऐसा ही एक क्षेत्र है, जो अरावली पर्वतमाला के आंचल और थार मरुस्थल के पूर्वोत्तर छोर पर स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र न केवल पर्यावरणविदों को आकर्षित करता है, बल्कि अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के कारण लोक संस्कृति का भी संगम स्थल है।

ताल छापर के इसी पारिस्थितिकीय और सांस्कृतिक ताने-बाने का भौगोलिक दृष्टिकोण से विस्तृत मूल्यांकन किया गया है।

विस्तृत भौगोलिक एवं भू-आकृतिक विस्तार :-

भौगोलिक अवस्थिति एवं प्रशासनिक विस्तार ताल छापर अभ्यारण्य भारत के राजस्थान राज्य के चूरू जिले की सुजानगढ़ तहसील में स्थित है। यह लगभग प्रशासनिक रूप से यह लगभग 7.19 वर्ग किलोमीटर (719 हेक्टेयर) के लघु क्षेत्र में विस्तृत है, जो इसे भारत के सबसे छोटे अभ्यारण्यों में से एक बनाता है, परंतु इसका पारिस्थितिक घनत्व अत्यधिक उच्च है।

भू-आकृति एवं स्थलाकृति:-

समतल लवणीय मैदान : 'ताल' शब्द का स्थानीय अर्थ है समतल भूमि या गड्ढा। यह चारों ओर से रेत के टीलों से घिरा एक चपटा, तश्तरीनुमा बेसिन है। वर्षाकाल में आस-पास के ऊंचे क्षेत्रों का पानी यहां एकत्रित हो जाता है।

मृदा की संरचना: यहां की मिट्टी मुख्य रूप से लवणीय और क्षारीय है। मिट्टी की ऊपरी परत में सोडियम क्लोराइड की अधिकता पायी जाती है। ग्रीष्मकाल में पानी सूखने पर धरातल पर सफेद नमक की चादर दिखाई देती है।

जलवायविक दशाएं :-

यहां की जलवायु अत्यधिक विषम और अर्ध-शुष्क से शुष्क है:

तापमान: ग्रीष्म ऋतु में यहां का तापमान 45° सेल्सियस से 48° सेल्सियस तक पहुँच जाता है, जिससे तीव्र वाष्पीकरण होता है। वहीं शीत ऋतु में तापमान गिरकर 0° से 4° सेल्सियस तक आ जाता है।

वर्षा: वार्षिक वर्षा का औसत बहुत कम (लगभग 300 से 400 मिमी) और अनिश्चित है। वर्षा मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसून से जुलाई से सितंबर के बीच होती है।

पारिस्थितिकी तंत्र एवं जैव विविधता का गहन विश्लेषण :-

ताल छापर पारिस्थितिकी तंत्र

अद्वितीय वनस्पति -

मोथिया घास (मीठी जड़ें) , लाना और लूंणक, (लवणीय वनस्पति, खेजड़ी व केंर के वृक्ष ।

समृद्ध जंतु जगत - काला हिरण (मुख्य प्रजाति), चिंकारा, मरुस्थलीय लोमड़ी, प्रवासी पक्षी (रैप्टर्स/क्रेन)

विशिष्ट वनस्पति- अत्यधिक लवणता और कम वर्षा के बावजूद यहाँ एक विशेष प्रकार की वनस्पति विकसित हुई है।

पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण - पर्यावरणविदों और वन विभाग की रिपोर्टों (जैन, 2015) के अनुसार, ताल छपर का घास का मैदान भारत में काले हिरणों की सघनता वाले सबसे छोटे लेकिन सबसे समृद्ध अभ्यारण्यों में से एक है। यहाँ की 'मोथिया' घास और शाकाहारी जीवों का संबंध मरुस्थलीय खाद्य श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मोथिया घास : यह ताल छपर की सबसे विशिष्ट घास है। इसकी जड़ें मोती के दाने जैसी गोल और मीठी होती हैं। यह काले हिरणों का सबसे पसंदीदा भोजन है और इसमें पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं।

अन्य घासें: यहाँ 'लूंणक' और 'लाना' जैसी लवणीय प्रतिरोधी घासें और झाड़ियाँ पायी जाती हैं।

वृक्ष प्रजातियां: मरुस्थल का कल्पवृक्ष कहा जाने वाला खेजड़ी, कैर और बेर के वृक्ष यहाँ बिखरे हुए रूप में पाए जाते हैं, जो जीवों को छाया प्रदान करते हैं।

जंतु जगत और वन्यजीव :-

काले हिरणों का स्वर्ग: ताल छपर मूलतः काले हिरणों के लिए आरक्षित है। वर्तमान में यहाँ इनकी संख्या 4,000 से अधिक है, जो इसकी वहन क्षमता से भी अधिक है। नर काले हिरणों के घुमावदार सींग और उनकी तीव्र दौड़ इस क्षेत्र का मुख्य आकर्षण है।

सह-प्रजातियां: यहाँ भारतीय चिंकारा, मरुस्थलीय बिल्ली, मरुस्थलीय लोमड़ी, नेवला और जंगली सूअर भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

पक्षी अभ्यारण्य के रूप में :-

सर्दियों के मौसम में ताल छपर एक अंतरराष्ट्रीय पक्षी केंद्र में बदल जाता है:

प्रवासी पक्षी: यहाँ साइबेरिया, मंगोलिया और मध्य एशिया से हजारों किलोमीटर की दूरी तय

करके 'डेमोइसेल क्रेन' (कुरंजा पक्षी) आते हैं।

शिकारी पक्षी : यह क्षेत्र हैरियर, यूरेशियन हॉबी, मार्श हैरियर, लैगर फाल्कन और विभिन्न प्रकार के ईगल्स (चील और बाज) का प्रमुख निवास स्थान बनता है। इसे भारत के सर्वश्रेष्ठ 'रैप्टर संरक्षण क्षेत्रों' में गिना जाता है।

सांस्कृतिक विस्तार एवं मानव-प्रकृति महासंगम :-

ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्व -

ताल छपर का इतिहास महाभारत काल से भी जोड़ा जाता है। स्थानीय लोक मान्यताओं के अनुसार, यह क्षेत्र कौरवों और पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य का निवास स्थान (द्रोणपुर) था। छपर के पास ही 'गोपालपुरा' नामक प्राचीन कस्बा है, जिसे द्रोणपुर माना जाता है। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण इस भूमि को पवित्र और पूजनीय माना जाता है, जिससे यहाँ जीवों के शिकार पर सदियों से स्वतः प्रतिबंध रहा है।

स्थानीय समुदायों की पर्यावरण-चेतना -

ताल छपर का सांस्कृतिक भूगोल यहाँ के मानव और प्रकृति के बीच के गहरे संबंध को दर्शाता है: बिश्नोई और जाट समुदाय की भूमिका - इस क्षेत्र के आस-पास रहने वाले ग्रामीण (विशेषकर बिश्नोई समाज) वन्यजीवों की रक्षा को अपना धार्मिक कर्तव्य मानते हैं। गुरु जाम्भोजी के 29 नियमों में से 'जीव दया' और 'हरे वृक्ष न काटना' यहाँ की जीवनशैली का हिस्सा है।

सामुदायिक संरक्षण - यदि कोई शिकारी क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो सरकारी तंत्र से पहले स्थानीय ग्रामीण एकजुट होकर वन्यजीवों की रक्षा के लिए खड़े हो जाते हैं।

यह 'सामुदायिक रूढ़िवादिता' का एक उत्कृष्ट वैश्विक उदाहरण है।

लोक संस्कृति, संगीत और अर्थव्यवस्था :-

कुरंजा पक्षी और लोकगीत - राजस्थानी लोकगीतों में 'कुरंजा' को विरह और संदेशवाहक का प्रतीक माना गया है। सर्दियों में जब कुरंजा पक्षी ताल छपर के आसमान में गूंजते हैं, तो स्थानीय संस्कृति जीवंत हो उठती है।

पारंपरिक ज्ञान और हस्तशिल्प - यहाँ के लोग केंर और सांगरी (खेजड़ी का फल) का उपयोग अपने पारंपरिक भोजन में करते हैं। स्थानीय हस्तशिल्प, ऊनी दरी उद्योग और मिट्टी के बर्तन बनाने की कला में मरुस्थलीय जीवों और वनस्पतियों के रूपांकनों का प्रयोग किया जाता है।

पारिस्थितिकीय एवं सांस्कृतिक चुनौतियां :-

वर्तमान में इस भौगोलिक और सांस्कृतिक महासंगम पर कई संकट मंडरा रहे हैं:

1. अतिक्रमण और शहरीकरण: अभ्यारण्य के चारों ओर बढ़ती मानवीय बस्तियों और सुजानगढ़-छापर खनन क्षेत्र के कारण वन्यजीवों के प्राकृतिक गलियारे बाधित हो रहे हैं।
2. विदेशी बबूल का आक्रमण: यह आक्रामक वनस्पति (अंग्रेजी बबूल) तेजी से फैल रही है, जो स्थानीय 'मोथिया' घास के मैदानों को नष्ट कर रही है।
3. आवारा मवेशी और जंगली कुत्ते: अभ्यारण्य में आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या काले हिरणों के नवजात बच्चों के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गई है।
4. जल भराव और लवणता में बदलाव: आस-पास के शहरी नालों का गंदा पानी कभी-कभी इस बेसिन में आ जाता है, जिससे यहां का नाजुक जलीय संतुलन बिगड़ रहा है।

उपसंहार :-

ताल छापर का भौगोलिक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह क्षेत्र केवल एक शुष्क लवणीय मैदान नहीं है, बल्कि मरुस्थलीय पारिस्थितिकी की जीवनरेखा है। यहां का 'सवाना' घास का मैदान और काले हिरणों का सह-अस्तित्व प्रकृति का एक विस्मयकारी उपहार है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में यहां की 'सांस्कृतिक विरासत' और 'स्थानीय समाज की पर्यावरण-चेतना' ने एक सुरक्षा कवच का कार्य किया है।

सांस्कृतिक भूगोल: सांस्कृतिक भूगोलवेत्ताओ ने माना है कि राजस्थान का बिश्नोई समाज और स्थानीय ग्रामीण समुदाय 'जीव दया' और 'खेजड़ी' संरक्षण के माध्यम से आदिकाल से ही वन्यजीवों के संरक्षक रहे हैं। यह सांस्कृतिक मूल्य ही वन्यजीवों की उत्तरजीविता का मुख्य कारण

है। अतः ताल छापर के संरक्षण के लिए केवल वैज्ञानिक या सरकारी प्रयास ही काफी नहीं हैं, बल्कि यहां के पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक पर्यावरण प्रबंधन नीतियों के साथ एकीकृत करना होगा। 'इको-टूरिज्म' को बढ़ावा देकर स्थानीय युवाओं को रोजगार से जोड़ना और विदेशी आक्रामक वनस्पतियों को हटाना इस अद्वितीय महासंगम को बचाने के लिए अत्यंत आवश्यक कदम हैं।

संदर्भ सूची :-

1. शर्मा, एच. एस. (1990). राजस्थान के भौगोलिक प्रदेश. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.
2. जैन, आर. के. (2015). थार मरुस्थल की जैव विविधता एवं उसका पारिस्थितिकीय अध्ययन. जोधपुर: साइंटिफिक पब्लिशर्स.
3. सिंह, एम. एवं कंवर, जी. (2018). शेखावाटी की लोक संस्कृति और पर्यावरण चेतना. उदयपुर: हिमांशु पब्लिकेशंस.
4. वन विभाग, राजस्थान सरकार (2022). ताल छपर वन्यजीव अभ्यारण्य - वार्षिक प्रबंधन एवं संरक्षण रिपोर्ट.
5. रंधावा, एम. एस. (1980). भारत में मानव और प्रकृति का सांस्कृतिक इतिहास. नई दिल्ली: आईसीएआर.
6. शर्मा, एच. एस. (1990) राजस्थान के भौगोलिक प्रदेश। जयपुर: राजस्थान ग्रंथ अकादमी।
7. जैन, आर. के. (2015) थार मरुस्थल की जैव विविधता एवं संरक्षण जोधपुर: वैज्ञानिक प्रकाशन।
8. वन विभाग, राजस्थान सरकार। ताल छपर अभ्यारण्य प्रबंधन योजना।

■ ■ ■